गोपिका चन्द्रमुखी

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

त्रेतायुग में लंकापति रावण की कनिष्ठा सहोदरा थी शूर्पणखा। शूर्पणखा की माता सुमाली राक्षस की कन्या कैकसी एवं पिता पुलस्त्य पुत्र 'विश्रवा' मुनि थे। कालकेय वंशीय मानवपति विद्युज्जिह्व के साथ शूर्पणखा का विवाह सम्पन्न हुआ। (रावण ने दिग्विजय के दौरान कालकेयगणों के साथ युद्ध किया एवं युद्ध के प्रतिबंध के तहत उन्होंने अपनी भगिनी पति विद्युज्जिह्व का वध किया। तब से शूर्पणखा खर और दूषण राक्षस भातृद्वय के संरक्षण में दण्डकारण्य में वास करने लगी। उस अरण्य में वास काल के दौरान ही श्री रामानुज लक्ष्मण ने उसका नासा-कर्ण छेदन किया। शूर्पणखा द्वारा श्रीराम को पतिरूप में पाने के लिए कठोर तपस्या करने पर ब्रह्मा ने उन्हें, 'जन्मांतर में तुम्हारी वासना पूर्ण होगी' कहकर वर प्रदान किया।

द्वापर युग में शूर्पणखा ने कुब्जा रूप में जन्म ग्रहण कर रामरूपी कृष्ण को पतिरूप में पाया था। मथुरा के राजा कंस की कुब्जपृष्ठा अनुलेपन वाहिका कुब्जा नाम की एक परिचारिका थी। कृष्ण और बलराम ने जब अक्रूर के संग कंस का धनुर्यज्ञ देखने के लिए प्रस्थान किया तो मार्ग के मध्य अनुलेपन हस्ता कुब्जा से उनका साक्षात् हुआ। कृष्ण द्वारा अनुलेपन हेतू प्रार्थना करने पर कुब्जा ने अतिशय प्रणय ज्ञापन पूर्वक उन्हें चंदन का अनुलेपन प्रदान किया था। कृष्ण ने कुब्जा की वक्रपृष्ठ को हस्तामर्षण पूर्वक आरोग्य प्रदान किया। इससे कुब्जा को अति सुन्दर देह की प्राप्ति हुई थी।

कृष्ण ने उसके साथ एक रात यापन की थी। उसके पश्चात् वह मुक्त होकर गोलोकधाम में गमन कर 'चन्द्रमुखी' नाम की गोपिका के रूप में वहाँ अवस्थान करने लगी। वृंदावन में श्रीराधा ने कुब्जा को 'चन्द्रमुखी' नाम प्रदान कर उन्हें गोपिका रूप में ग्रहण कर प्रेमशक्ति प्रदान किया था।

(रामायण ब्रह्मवैवर्त पुराण और हरिवंश से संग्रहीत)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख